उनमें अधिक प्रतियोगी भावना पैदा करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। लेकिन हमें उसी पर ही संतोष नहीं करना है। सूखे का प्रभाव आगामी महीनों में भी रह सकता है और उसमें औद्योगिक विकास में कमी आ सकती है। हम आगे होने वाले विकास पर सावधानीपूर्वक नजर रखेंगे और हम इसी उच्च गति को बनाए रखने की कोशिश करेंगे। कुछ वर्ष पहले तक बाढ़ का अर्थ था तबाही। 1979-80 में सूखा पड़ा था, लेकिन वह सूखा इतना गम्भीर नहीं था जितना कि पिछले वर्षों में पड़ा था। अत: कुल राष्ट्रीय उत्पादन में 4.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इस वर्ष कुल राष्ट्रीय उत्पादन में कोई गिरावट नहीं आई है—संभवत: वृद्धि ही हुई है। ऐसे गत सभी अवसरों पर अवनति ही हुई है, प्रगति का प्रश्न ही नहीं उठता। इस वर्ष हम आगे बढ़े हैं। हमारी योजना के इतिहास में पहली बार हमने वास्तविक अर्थों में सातवीं पंचवर्षीय योजना के पहले 4 वर्षों में केन्द्रीय क्षेत्र के परिव्यय का 80 प्रतिशत का लक्ष्य प्राप्त किया है। इससे पहले निवेश के मामले में ऐसी स्थिति कभी देखने में नहीं आई। परियोजना प्रबन्ध में पर्याप्त सुधार हुआ है। कई बड़े-बड़े सार्वजनिक क्षेत्र को उद्यम जल्दी ही काम शुरू कर देंगे। यह व्यवहारिक समाजवाद है—समाजवाद जिसमें एक ही योजना अवधि में सरकारी क्षेत्र में पूंजी निवेश दुगना हो गया। यह वह समाजवाद है जिसमें सरकारी क्षेत्र में कार्य निष्पादन, उत्पादकता तथा उसके लाभ में इतनी वृद्धि हुई है जो पहले कभी नहीं हुई। हम एक मजबूत सार्वजनिक क्षेत्र, जिसमें काफी स्वायत्तता हो, के लिए वचनबद्ध हैं। हम एक श्वेतपत्र के माध्यम से इसके बारे में योजनाएं शीघ्र ही संसद में रखेंगे जिसमें सार्वजनिक क्षेत्र के सम्बन्ध में हम क्या उपाय करने जा रहे हैं उसका विवरण होगा।

मूल्यों के सम्बन्ध में हमें सभी को बड़ी चिंता है। जिन सदस्यों ने मूल्य वृद्धि पर चिन्ता व्यक्त की है हम उनके साथ हैं हम मुद्रास्फीति नियन्त्रण करने को उच्च प्राथमिकता देते हैं। हमने ऐसे कदम उठाए हैं कि मुद्रास्फीति और न बढ़ने पाए। वर्ष 1979-80 में 1979-80 वर्ष के साथ इसकी तुलना करना इसलिए बेहतर होगा क्योंकि 1979 80 में अन्तिम बार सूखा पड़ा था और जैसा कि मैंने कहा वह सूखा इतना गम्भीर नहीं था जितना कि अब है—उस समय विपक्ष में बैठे मेरे साथियों की सरकार थी। महोदय, आपको याद होगा कि उस समय 21.4 प्रतिशत तक मूल्य वृद्धि हुई थी।

प्रो० मधु दंडवते (राजापुर) : वर्ष 1977-78 के बारे में आपका क्या विचार है ?

श्री राजीव गांधी : 1977-78 में सूखा नहीं पड़ा था वर्ष 1975 से 1977 तक अर्थ व्यवस्था को जो गति मिली हुई थी उसके आधार पर वर्ष 1977-78 चला। और जब यह वर्ष समाप्त हुआ तब सरकार का असली रंग सामने आया था। (व्यवधान) मुझे मैंने असली रंग कहे हैं क्योंकि सरकार एक रंग की नहीं थी।

प्रो० मधु दंडवते : यदि उनके शासन काल में प्रगति हुई है तो वह अतीत के बल पर हुई है और यदि अवनति हुई है तो यह उनकी अपनी वजह से हुई है। उनका तर्क यही लगता है।

श्री राजीव गांधी : मुझे खुशी है कि श्री मधु दंडवते जी मुझसे सहमत हैं ; जैसा कि मैं समझता हूं कि उन्होंने कहा कि प्रगति ··· (व्यवधान)

श्री वसुदेव आचार्य (बांकुरा) : उन्होंने कहा है कि यह आपका तर्क है।

श्री राजीव गांधी : निश्चय ही हमने प्रगति की है। इन तीन वर्षों में हमारी सरकार ने केवल इस वजह से बहुत कुछ किया है क्योंकि इन्दिरा जी ने पिछले पांच वर्षों में उस पर इतना बल

दिया था और मुझे यह कहने में बिलकुल हिचकिचाहट नहीं हो रही है। यदि उन्होंने प्रगति पर इतना जोर नहीं दिया होता, हमें इस सूखे का सामना करने में बहुत कठिनाई सहनी पड़ती।

मैं अपने सहयोगियों को यह याद दिलाना चाहता हूं कि यदि 1987 तक उन्होंने देश में इतनी गति न लाई होती, मैं सोच भी नहीं सकता कि देश की क्या हालत हो सकती थी क्योंकि यदि इसी गति से उन्होंने प्रगति न की होती तो वे देश को पीछे की ओर ही ले जाते।

प्रो० मधु दंडवते : उन्होंने देश को अब जो गति दी है उससे तो लोकतंत्र ही समाप्त हो गया है।

श्री राजीव गांधी : माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने लोकतंत्र की बात कही है। मैं नहीं समझता किसी ने उनकी बात सुनी है। मैं माननीय सदस्य को यह स्मरण कराना चाहता हूं कि 1977 के चुनाव इंदिरा जी ने कराए थे, विपक्ष ने नहीं। (व्यवधान)

जी हां इससे उनकी वचनबद्धता तथा कांग्रेस की लोकतंत्र के प्रति वचनबद्धता का पता चलता है (व्यवधान)

महोदय, हमारे कुछ मित्र बहुत शोर मचाते हैं। लेकिन मैं उन्हें याद दिलाना चाहता हूं कि उन्हें सोचना चाहिए कि 10 वर्ष पहले वे कहां थे। महोदय, मूल्यों की समस्या बड़ी गंभीर है। लेकिन प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद हम मुद्रा स्फीति की दर 10 प्रतिशत से कम रखने में सफल हुए हैं और हम बड़ी कोशिश सावधानी सावधानी पूर्वक उस पर निगाह रखेंगे कि यह दर आगे न बढ़ने पाए।

एक माननीय सदस्य : लेकिन यह दर आगे बढ़ेगी।

श्री राजीव गांधी : पिछले दो वर्षों में मुद्रा स्फीति प्रतिवर्ष औसतन केवल 4.5 प्रतिशत रही है। ऐसा हम बजट घाटे पर नियंत्रण रखकर, मूल्यों में आगे-पीछे नियंत्रण रखने के लिए वित्तीय घाटे वित्तीय नीतियों को लागू करके कर सके हैं। ऐसा हमने आवश्यक वस्तुओं की सप्लाई को सुनिश्चित करके तथा विदेशों से अतिरिक्त खाद्य तेलों का आयात करके किया है ताकि कमी को पूरा किया जा सके। हम मूल्य सूचकांक पर नजर रखते रहेंगे और मूल्यों को कम रखने के लिये हर सम्भव प्रयास करेंगे। सरकार के खर्चे के संबंध में मैं विशेष रूप से चिन्तित हूं। यह एक क्षेत्र है जिसमें हम उतना नहीं कर पाये हैं जितना की दल चाहते हैं पर इसका यह अर्थ नहीं कि इस क्षेत्र में हमने प्रगति नहीं की है, हमने की है परंतु इसमें अभी और भी बहुत गुंजाइश है। हमें सरकार की उत्पादकता पर भी ध्यान देना है। कुछ क्षेत्रों में, जैसे सरकारी क्षेत्र के लिये आधारभूत ढांचा जुटाने में, हम सफल हुये हैं। हमने अच्छा कार्य किया है काफी कुछ अभी और भी करना है और अन्य क्षेत्रों में भी काफी काम करना है।

महोदय, गरीबी दूर करने के कार्य को सरकार सर्वोतम प्राथमिकता देती है और हमारे विचार में गरीबी समाज के निर्धन वर्ग के लिये अच्छी शिक्षा की व्यवस्था करके ही समाप्त की जा सकती है। देश से गरीबी अर्थव्यवस्था के स्वस्थ विकास तथा गरीबी-विरोधी कार्यक्रमों के माध्यम से ही दूर की जा सकती है। इन तीनों सम्रग प्रयासों के माध्यम से हमने पिछले कुछ वर्षों में गरीबी पर काबू किया है। इसमें कुछ कमी आई है। इससे पहले की किसी भी सरकार ने गरीबी विरोधी कार्यक्रमों

लिये कभी भी इतनी विशाल धनराशि निर्धारित नहीं की। किसी भी सरकार ने इन कार्यक्रमों के क्रियान्वयन के लिये इतनी व्यवस्था नहीं की जितनी की हमने की है।

एक माननीय सदस्य ने विकास राशि में से लीकेज की शिकायत की है। हम समय-समय पर आकलन करके इन खामियों को दूर कर रहे हैं जिससे हम चालू कार्यक्रमों को समायोजित करने में समर्थ होते हैं, कभी-कभी इससे हमें प्रणाली को बदलने में मदद मिलती है ताकि लीकेज को कम किया जा सके। लेकिन मैं कहूंगा कि सभी प्रकार के लीकेज खराब हैं, जो लीकेज नौकरशाही प्रणाली में होता है वह गलत है लेकिन वो लीकेज सबसे ही ज्यादा गलत है जो कि दल के कैडर में जाता है।

(व्यवधान)

श्री सैफुद्दीन चौधरी (करबा) : आप लोन मेला के बारे बात कर रहे हैं।

श्री राजीव गांधी : आप अपने आप को दोषी क्यों महसूस कर रहे हैं ?

श्री बसुदेव आचार्य : आप किसके साथ 'लोन मेला' आयोजित कर रहे हैं ? (व्यवधान)

श्री राजीव गांधी : महोदय, मैं माननीय सदस्यों को बता दूं कि सदन में दो या तीन ही संगठित दल हैं। (व्यवधान)

प्रो० मधु दंडवते : महोदय, हमें खुशी है कि उन्होंने अपना दोष तो माना।

श्री राजीव गांधी : महोदय छठी योजना अवधि में गरीबी अनुपात में बहुत ही विस्मय जनक कमी आई। सातवीं योजना में हमें आशा है कि इसमें और भी कमी आयेगी। तथा इस शताब्दी के अन्त तक हम सहस्राब्दयति को समाप्त करने का निश्चित प्रयास करेंगे। सरकार ने स्वयं ही इन चुनौतियों को गम्भीरता से लिया है और वह उसमें सफल रही है। खेद की बात है कि यही बात विरोधी पक्ष के लिये नहीं कही जा सकी।

श्री बसुदेव आचार्य : क्यों ?

श्री राजीव गांधी : मैं उन लोगों के लिये अपनी कही गई बात को पुनः नहीं दोहराऊंगा। जिन्होंने हैड फोन्स लगाये हुये हैं।

महोदय, जबकि देश में शताब्दी का भयंकर सूखा पड़ा है तथा राष्ट्र की अखण्डता एवं सुरक्षा को खतरा है, विरोधी पक्ष जिसके पास अपनी कोई नीतियां नहीं हैं, उन्हें छिपाने के लिए व्यर्थ ही में कांड खड़े कर रहा है। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : फेयरफैक्स।

श्री बसुदेव आचार्य : फेयरफैक्स तथा बोफोर्स। (व्यवधान)

श्री राजीव गांधी : इतना ही नहीं, इससे भी ज्यादा आप यह पायेंगे कौन सही है और कौन गलत।

महोदय संसद का मूल्यवान समय व्यर्थ किया गया है तथा मेरा विश्वास है कि विरोधी पक्ष से एक से अधिक सदस्य ने समय की कमी के बारे में शिकायत की है कि उन्हें पिछले वर्ष के बजट की मांगों पर चर्चा करनी है। लेकिन क्या मैं सदस्यों को याद दिलाऊं कि महोदय वह समय कहां खत्म किया गया ? वो समय कहां बर्बाद किया गया ?

श्री वसुदेव आचार्य : क्यों ?

श्री राजीव गांधी : *उस समय को किसने खत्म किया ? गम्भीर मसलों के लिये दिये गये* समय को किस ने खत्म किया है।

श्री वसुदेव आचार्य : आपकी असलियत के बारे में बताने के लिये।

श्री राजीव गांधी : भूतों को पकड़ने के लिये।

श्री वसुदेव आचार्य : आपके द्वारा किये गये भ्रष्टाचारों को उजागर करने के लिये।

श्री राजीव गांधी : प्रकाश में सिर्फ···भ्रष्टाचार आया है। (व्यवधान)

प्रो० मधु दण्डवते : पूंजी को बाहर ले जाना कोई भ्रष्टाचार नहीं है ?

श्री राजीव गांधी : महोदय, पिछले वर्ष के पूर्वार्द्ध उठाये गये मुद्दों में से भ्रष्टाचार का जो एक मात्र मुद्दा सामने आया है वह है भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति द्वारा दिया गया बयान, जिसमें भूतपूर्व राष्ट्रपति ने कहा है कि 30 से 40 करोड़ रुपये उन्हें देने के लिए कहा गया था। (व्यवधान) महोदय, मैं इस अवसर पर भूतपूर्व राष्ट्रपति के मजबूत नीतिसंगत रवैये पर उन्हें बधाई देता हूं कि वह उनकी बातों में नहीं आए।

प्रो० मधु दंडवते : महोदय, उसी वक्तव्य में उन्होंने कहा है कि राजीव सरकार के सदस्य उसके लिये जिम्मेदार थे। उन्होंने यह बात स्पष्ट की है। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : गलत बात तो गलत ही है चाहे वह कोई भी हो।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया शांति रखिये। बैठ जाइये।

प्रो० मधु दण्डवते : महोदय, हम किसी अन्य आयोग के लिये भी तैयार हैं यदि वे चाहे तो। हम इस पर आयोग का गठन चाहते हैं। (व्यवधान)

श्री राजीव गांधी : महोदय, मैं सीधे ही वे बातें उद्धृत नहीं करना चाहता जो उन्होंने कही है क्योंकि मेरे पास वो लिखित सामग्री नहीं है। (व्यवधान)

प्रो० मधु दण्डवते : महोदय, मेरे पास कापी है। आप 'सन्डे' में छपे लेख को पढ़िये। जिसमें इन्टरव्यू दिया गया है। उन्होंने आरोप लगाया है कि दबाव डालने के लिये वर्तमान मंत्रिमण्डल के सदस्य भी जिम्मेदार थे। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपा शांति रखिये।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : शांति रखिये। कृपा बैठ जाईये।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आप क्या कर रहे हैं।

[अनुवाद]

श्री राजीव गांधी : यदि मुझे ठीक से याद है -- (व्यवधान)

श्री बसुदेव आचार्य : उन्होंने कहा कि एक तिहाई मन्त्रीगण इसमें शामिल थे। (व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आप क्या कर रहे हैं।

(व्यवधान)

श्री राजीव गांधी : यदि मुझे याद है तो उन्होंने विशेष रूप से यह कहा था कि मेरे मन्त्रिमंडल के कतिपय सदस्य, जोकि अब मेरे मन्त्रिमण्डल के सदस्य नहीं हैं।

प्रो० मधु दण्डवते : महोदय, उन्होंने कहा है कि वे आज भी मन्त्रिमण्डल के सदस्य है। (व्यवधान)

श्री बसुदेव आचार्य : वे अपने मन्त्रिमण्डल में हैं। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया शांति रखिये। यह अत्यन्त गम्भीर मामला है। आप इसके लिये समिति नियुक्त कर सकते हैं।

(व्यवधान)

प्रो० मधु दण्डवते : प्रधान मन्त्री की जानकारी के लिये क्या मैं उस इन्टरव्यू को सभा पटल पर रखूं ?

प्रो० के०के० तिवारी (बक्सर) : अब वे मन्त्री महोदय, वे सदस्य विरोधी पक्ष में बैठे हुये हैं।

श्री थम्पन थामस : मैं व्यवस्था का प्रश्न उठाना चाहता हूं। सदन के समय के बारे में उन्होंने कहा है कि सभा के समय का दुरुपयोग किया गया है। महोदय यह आप पर आरोप लगाया जा रहा है (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाईय।

(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : अनुमति नहीं है। कृपया बैठ जाईये।

श्री राजीव गांधी : महोदय, मैं एक बार फिर से कहना चाहूंगा। कि मैंने 'दुरुपयोग' शब्द नहीं कहा है मैंने तो कहा था 'नष्ट करना' (व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : बैठ जाईये।

प्रो० मधु दंडवते : मैं आपको बताऊंगा कि मुण्दडा कांड को उजागर करने में प्रधान मन्त्री के पिता ने सदन का बहुत-सा समय लिया। लेकिन वह पूर्णतः औचित्यपूर्ण था। मुण्दडा भ्रष्टाचार

** कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

को उजागर करने में श्री फिरोज गांधी ने जो सदन का समय लिया वह औचित्यपूर्ण था। उन्हें याद करने दीजिए।

श्री राजीव गांधी : भ्रष्टाचार का भण्डा फोड़ने भी लिए यदि कोई व्यक्ति सदन को समय लेता है तो मैं इस बात से पूरी तरह सहमत हूं और भ्रष्टाचार को उजागर करने के लिये हम सदन का समय लेंगे—परन्तु आपको तथ्यों के साथ आना होगा।

अध्यक्ष महोदय : मैंने इन बातों को सुना है। मैं नहीं जानता कि इस समय आपके बीच में मुझे बोलना चाहिये था नहीं। लेकिन महोदय, जो कुछ आपने कहा और उन्होंने कहा है—मेरे विचार से देश की सुरक्षा और संरक्षा के लिए एक गम्भीर विषय है। मेरे विचार से इस बारे में सच्चाई जानने के लिये हमें कुछ करना होगा।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाईये।

प्रो० मधु दंडवते : आपकी टिप्पणी के लिये धन्यवाद। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाईये।

श्री राजीव गांधी : माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके कहने पर—(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया शांति रखिये। कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आप क्या कर रहे हैं ?

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप उनसे मत बोलो।

[अनुवाद]

श्री राजीव गांधी : माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके कहने पर मैं गृहमन्त्री से अनुरोध करूंगा कि वह यह पता लगाएं कि यह 30 या 40 करोड़ रुपये कहां हैं और जिस तरह से प्राप्त किये गये।

प्रो० मधु दंडवते : महोदय हम पूरी तरह आयकर समर्थन करते हैं। हम आपको बधाई देते हैं।

श्री सोमनाथ चटर्जी : उन्हें सदन को सूचित करना चाहिये।

वसुदेव आचार्य : इसका पता लगाने के लिये सदन की एक समिति का गठन किया जाना चाहिये। हम इसके लिये तैयार हैं।

श्री राजीव गांधी : मैं गृह मन्त्री से अनुरोध करूंगा कि वे इस बात का पता लगाने की कोशिश करें कि इस पैसे का किस प्रकार उपयोग किया जाना था, क्योंकि राष्ट्रपति चुनाव में कोई

प्रचार नहीं होता, तो इस तरह से राष्ट्रपति के चुनाव के दौरान किस तरह 30-40 करोड़ रुपये का उपयोग किया जाता था।

प्रो० मधु दंडवते : महोदय, गृह मन्त्री को आपके आदेश का पालन करने दीजिये।

श्री सैफुद्दीन चौधरी : सदन की समिति क्यों नहीं ?

4.00 म०प०

[हिंदी]

अध्यक्ष महोदय : आप क्यों शोर कर रहे हैं ?

(व्यवधान)

[अनुवाद]

श्री वसुदेव आचार्य : क्या आप सभा की एक समिति नियुक्त करने के लिए तैयार हैं ?

श्री इन्द्रजीत गुप्त (बसीर हाट) : जो कुछ आपने अभी-अभी कहा है क्या उससे यह समझा जाये कि आप कोई भी जांच कराने और यह पता लगाने के लिए कि भूतपूर्व राष्ट्रपति को धन कौन दे रहा था, गृह मन्त्री को उत्तरदायी बना रहे हैं ?

प्रो० मधु दंडवते : यह भी कि मन्त्रीमण्डल के कौन-कौन से सदस्य हैं ?

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आप पी०एम० को बोलने क्यों नहीं देते ?

[अनुवाद]

श्री इन्द्रजीत गुप्त : इसका पता लगाने के लिए क्या आप गृह मन्त्री को उत्तरदायी बना रहे हैं ?

श्री राजीव गांधी : नहीं। मैं तो उनको इस बात का पता लगाने के लिए कह रहा हूं कि इसका पता लगाने के लिए सबसे अच्छा तरीका कौनसा है ?

श्री इन्द्रजीत गुप्त : उनको जिम्मेदार बनाया जाना चाहिए।

प्रो० मधु दंडवते : भूतपूर्व राष्ट्रपति के संपूर्ण साक्षात्कार की जांच की जानी चाहिए क्योंकि उन्होंने वर्तमान मन्त्री मण्डल के सदस्यों का जिक्र किया है। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : बैठ जाइये और अपना स्थान ग्रहण करिये। अब बैठ जाइये।

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइये।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइये।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

श्री राजीव गांधी : हम आपके अनुदेशों का पालन करेंगे। यह खेद की बात है कि कुछ प्रगतिशील···(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कुछ नहीं ।

[हिंदी]

श्री इन्द्रजीत गुप्त : आपकी क्या इंस्ट्रक्शंस हैं ?

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : जो कुछ मैंने कहा है उसे कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित किया गया है । (व्यवधान)

श्री तम्पन थामस (मवेलिकरा) : हम सभा की एक समिति चाहते हैं। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : काफी हो गया । कृपया बैठ जाइये । कृपया प्रधानमन्त्री को बोलने दें ।

प्रो० मधु दंडवते : संपूर्ण वाद-विवाद में यह सबसे बढ़िया हस्तक्षेप है ।

श्री राजीव गांधी : यह खेद की बात है कि जब प्रौद्योगिकी में नवीनीकरण की बात आती है तथाकथित प्रगतिशील लोग प्रतिक्रियावादी विचार प्रकट करते हैं । अप्रचलित प्रौद्योगिकी से उत्पादकता का स्तर रहता है । इससे कम मजदूरी दी जाती है और कम विकास होता है, शायद कोई विकास नहीं होता । विकास के बगैर लाखों अतिरिक्त नौकरियों की व्यवस्था कैसे होगी ? विकास के बगैर हम अपने युवकों और युवतियों को रोजगार कैसे देंगे ? श्रमिकों को उन पुरानी इकाइयों में जो अवश्य ही रुग्ण हो जाती हैं, लगाने के अलावा और कोई भी कार्य श्रमिक विरोधी नहीं हो सकता । श्रमिक को रोजगार के अवसर से वंचित करके उसकी नौकरी के लिये खतरा पैदा करने के अलावा और लाखों को नाम दर्ज कराने के अवसर से वंचित रखने के अलावा और कोई भी बात श्रमिक विरोधी नहीं हो सकती । जैसा कि एक सदस्य ने कहा है अगर रुग्ण इकाइयों की संख्या में आठ गुना वृद्धि हो गयी है तो इसका मुख्य कारण पूर्णतया अप्रचलित प्रौद्योगिकी, कुप्रबन्ध और विचारहीन श्रमिक संघवाद हैं । हमें इनका सामना करना है । (व्यवधान) महोदय, उस सदस्य का समाधान प्रौद्योगिकी में नवीनीकरण वाला नहीं है । यह सिर्फ शारीरिक श्रम की बात है । ऐसी नीति से अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा जिससे उद्योगों में बहुत अधिक रुग्णता आ जायेगी । बेरोजगारी के अभिशाप को समाप्त करने के लिए उचित शिक्षा, तीव्र विकास और कार्यदक्षता में निरन्तर सुधार की आवश्यकता है । जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी में तरक्की होती है, वही श्रमिक पायेगा कि उसका कठोर श्रम कम हो गया है, उसकी उत्पादकता बढ़ गयी है और उसकी मजदूरी बढ़ गयी है । इसके साथ-साथ जो बेरोजगार हैं उनके लिए रोजगार के अवसरों में वृद्धि होगी । हमारी नीतियों की वजह से दो वर्ष तक श्रम संबन्ध बहुत अच्छे रहे हैं । हमारे उद्योग और श्रमिक में अधिक उत्पादकता न्यूनतम लागत और उत्तम गुणवत्ता के प्रति एक नई चेतना उत्पन्न हुई है । प्रबन्ध में श्रमिक की अधिक भागीदारी होती जा रही है विशेषकर सरकारी क्षेत्र की इकाइयों में । (व्यवधान)

श्री वसुदेव आचार्य : कहां पर कोई एक उदाहरण तो दीजिए । (व्यवधान)

श्री राजीव गांधी : महोदय, कांग्रेस दल सिर्फ किसानों और ग्रामीणों का ही एक दल नहीं है परन्तु श्रमिक वर्ग का भी यह एक वास्तविक दल है । (व्यवधान)

यह सेवारत, बेरोजगार और असंगठित लोगों का प्रतिनिधित्व करता है : कांग्रेस अधिक बहुमत वाले श्रमिक वर्ग का नुकसान करते हुये एक अल्पसंख्यक श्रमिक वर्ग के हितों को बढ़ावा नहीं

देती जैसा कि कुछ दूसरे दल करते हैं । हमारे देश में विकास (व्यवधान) महोदय, कुछ लोगों का दिमाग 20वीं शताब्दी में नहीं आयेगा । वे मार्क्स के साथ ही रहेंगे । (व्यवधान)

प्रो० मधु दंडवते : कम से कम कुछ लोगों का दिमाग 20वीं शताब्दी में है; दूसरों का 18वीं शताब्दी में है ।

श्री बसुदेव आचार्य : यहां तक कि 17वीं शताब्दी में भी ।

श्री राजीव गांधी : महोदय, खेद की बात है कि वे काल की तरह सोचते हैं परन्तु ग्रुपों की तरह व्यवहार करते हैं । महोदय, हमारे देश में विकास की जड़ें लोकतन्त्र में हैं । यदि हम अधिक विकास चाहते हैं तो और अधिक लोकतन्त्र होना चाहिए । यह एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष है जो हमें गोष्ठियों और फिलहाल की जाने वाली जिलाधीशों की बैठकों से मिल रहा है । (व्यवधान)

इन बैठकों से कुछ बातें तो पहले ही स्पष्ट हो गयी हैं । एक तो यह है कि यदि जिला स्तर पर लोकतंत्र का विकास ठीक ढंग से नहीं किया गया तो प्रशासन के लिए कार्य करना मुश्किल हो जाता है । दूसरी बात यह है जिले की योजना बनाते समय स्वयं जिले की आवश्यकताओं की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया है । इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है । और प्रारम्भिक स्तर पर सही रूप से उत्तरदायी बनाने के लिए जिला स्तर पर विद्यमान लोकतांत्रिक संस्थाओं और प्रशासन के बीच इस साझेदारी का निर्माण करने की आवश्यकता है । इसके लिए, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि निचले स्तरों पर चुनाव नियमित रूप से तथा बगैर देरी के हों ।

श्री बसुदेव आचार्य : बिहार, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश और दूसरे राज्यों के बारे में आपका क्या विचार है ? आप अपने राज्य में चुनाव करवायें । (व्यवधान)

श्री राजीव गांधी : माननीय सदस्य ने एक प्रश्न उठाया है । कांग्रेस की कार्यकारणी से कल ही हमने अपने मुख्य मंत्रियों को अपने राज्यों में चुनाव करवाने के लिए निर्देश दिये हैं । अधिकतर राज्यों में तो चुनावों की घोषणा कर दी गयी है या करना दिये गये हैं ।

श्री बी० शोभनाद्रीश्वर राव (विजयवाड़ा) : यहां तक कि राजधानी में भी चुनाव स्थगित कर दिये गये है ।

प्रो० मधु दंडवते : इन्होंने एक अपना देश जारी कर दिया और चुनावों को एक वर्ष के लिए स्थगित कर दिया । (व्यवधान)

श्री बी० शोभानाद्रीश्वर राव : आप अपने दल में चुनाव करवायें । (व्यवधान)

श्री राजीव गांधी : मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूं, कि चुनाव निष्पक्ष होने चाहिये और उनमें गड़बड़ी नहीं होनी चाहिये । (व्यवधान)

श्री बसुदेव आचार्य : आपने त्रिपुरा और मेघालय में क्या किया ? (व्यवधान)

श्री राजीव गांधी : मैंने तो ऐसा नहीं कहा है । मंत्री मंडल के कुछ सदस्यों ने ऐसा कहा, इस बात की मुझे जानकारी नहीं है । (व्यवधान)

श्री नारायण चौबे (मिदनापुर) : आप कांग्रेस दल में चुनाव क्यों नहीं करवाये । (व्यवधान)

श्री राजीव गांधी : दूसरी तरफ जब हम अपने राष्ट्रीय उद्देश्यों तथा लक्ष्यों को देखते हैं तब हमारा इरादा स्थानीय आवश्यकताओं पर ध्यान देने का होता है। मैं योजना आयोग से अनुरोध कर रहा हूं कि अब से ही आठवीं योजना के बारे में ध्याना देना आरम्भ कर दिया जाना चाहिए और जिला योजनाओं से आठवीं योजना का निर्माण करने के लिए, जिले को एक इकाई मानकर आठवीं योजना का निर्माण किया जाना चाहिए। मैंने उनसे सभी राज्य सरकारों को यह अनुदेश देने के लिए कहा है कि अपने राज्यों के लिए जिस योजना के आधार पर अपनी आठवीं योजना के निर्माण की शुरूआत करें। (व्यवधान)

श्री बसुदेव आचार्य : हमने पश्चिम बंगाल में एकड़ स्तर पर भी ऐसा कर रखा है। (व्यवधान)

श्री अमल दत्ता (डायमंड हार्बर) : आप योजना आयोग के सदस्यों को जोकर कहते हैं।

श्री राजीव गांधी : कुछ राज्य दावा करते हैं कि उन्होंने ऐसा किया है। परन्तु महोदय, मैं आपको आश्वासन देता हूं कि जब असलियत में कागज पर संस्था को देखा जाता है तो ऐसा कोई भी राज्य नहीं मिलता जिसने ऐसा किया हो। न तो कांग्रेस दल के राज्य ने और नहीं विरोधी दल के राज्य ने ऐसा किया है। (व्यवधान) दस्तावेज में इस प्रकार नहीं है।

श्री बसुदेव आचार्य : पश्चिम बंगाल में हमने पहले से ही खण्ड स्तर पर योजना बनाने का कार्य आरम्भ कर दिया है। (व्यवधान)

श्री राजीव गांधी : मैं माननीय सदस्यों से बहस नहीं करना चाहता हूं।

श्री अमल दत्त : आप योजना आयोग के सदस्यों को जोकर कहते हैं।

श्री राजीव गांधी : क्या ग्रोसो ?

श्री अमल दत्ता : योजना आयोग के जिन सदस्यों को आप जोकर कहते हैं उन्होंने आपको जानकारी नहीं दी।

श्री राजीव गांधी : अब से मुझे उनको ग्रोशा कहना पड़ेगा।

श्री अमल दत्ता : आप मुझे कुछ भी कहलें परन्तु आप उनको भी जोकर कहते हैं। (व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आप जो कह रहे हैं .....

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : यह अच्छा नहीं लगता है।

[अनुवाद]

श्री राजीव गांधी : मैंने कभी योजना आयोग के सदस्यों को जोकर नहीं कहा। उस बारे में मैं स्पष्ट बात बताता हूं। लगता है कि जोकर तो यहां पर सामने बैठे हैं जो बातों को तोड़-मरोड़ कर पेश करते हैं (व्यवधान)

श्री वसुदेव आचार्य : यह समाचार पत्रों में छपा है। आपने इसका खंडन भी नहीं किया है।

श्री राजीव गांधी : महोदय, समाचार पत्रों में छपने वाली प्रत्येक बात का खंडन करने की मैं परवाह नहीं करता। मैं स्पष्ट तथा इस बारे में बताता हूं। योजना आयोग का मैं बहुत अधिक सम्मान करता हूं। मेरी योजना आयोग के प्रति एक मात्र शिकायत यह है कि इसकी योजना में इतनी आक्रामकता नहीं है, यह योजना संबंधी मामलों में मंत्रालयों से प्राप्त सामग्री का समायोजना और संतुलन करने तक सीमित रहता है। मैं चाहता हूं कि योजना आयोग और अधिक आगे बढ़े और अधिक प्रभावकारी योजना का निर्माण करे। मैं उनसे यही बातें कर रहा था :

प्रो० मधु दंडवते : परन्तु आप तो योजना आयोग के अध्यक्ष हैं।

श्री राजीव गांधी : इसीलिए मैंने आयोग को यह करने के लिए निर्देश दिया है।

श्री वसुदेव आचार्य : आप स्वयं को भी निर्देश दें। (व्यवधान)

श्री राजीव गांधी : महोदय, शायद सुदूर भविष्य में किसी दिन माननीय सदस्य सरकार में एक सदस्य होंगे। तब उनको पता चलेगा कि योजना आयोग कैसे चलता है।

रक्षा मन्त्री (श्री कृष्ण चन्द्र पंत) : कोई उम्मीद नहीं है। (व्यवधान)

श्री राजीव गांधी : यह दल बदल सकते हैं।

(व्यवधान)

महोदय, इस लक्ष्य के लिए, पर्याप्त योजना प्रस्तावों को तैयार करने के लिए, हम जिला प्रशासनों की क्षमता को मजबूत करना चाहते हैं और विकास के लिए संसाधनों का परिनियोजन करने में हम जिला प्रशासन को अधिक छूट देना चाहते हैं। स्थानीय विकास के लिए स्थानीय लोकतंत्र का उपयोग करते हुये हम सहभागिता पूर्ण विकास को नया जीवन देना चाहते हैं।

महोदय, जो मुख्य मन्त्री मुझे उन कार्यशालाओं में ले गये हैं उन्होंने यह कहा है कि यह मुलाकात उनके लिए है और जिला मजिस्ट्रेटों के लिए कितनी लाभप्रद है। एक मुख्यमन्त्री ने हमारे नियन्त्रण को अस्वीकार कर दिया और मुलाकात में उपस्थित होने के निमन्त्रण को अस्वीकार करने के बाद उन्होंने यह शिकायत की कि उनके पीछे से षड्यन्त्र रचा जा रहा है। महोदय, मुझे केवल यह कहना है कि षड्यन्त्र केवल यह है कि प्रशासन अधिक उत्तरदायी होना चाहिए। मैं इन कार्यशालाओं की कर्तव्य-निष्ठा और उत्साह तथा हमारे जिला मजिस्ट्रेटों के प्रजातन्त्र में अटूट विश्वास से बहुत प्रभावित हुआ हूं।

महोदय, अब मुझे पंजाब का जिक्र करने दीजिये। पंजाब में प्रतिनिध्यात्मक लोकतान्त्र को वहां पूरा-पूरा अवसर दिया गया। दुर्भाग्य से वहां की निर्वाचित सरकार स्थिति के अनुरूप कार्य करने में विफल रही और वहां अब भी ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता जिससे यह पता चल सके कि वहां का निर्वाचित सतारूढ़ दल अब दृढ़ता से और स्पष्टता से आतंकवाद का सामना करने के लिए तैयार है। केवल इस प्रकार की तत्परता से ही सामान्य राजनैतिक प्रक्रिया पुनः स्थापित की जा सकती है। आतंकवाद के खतरे को अनियन्त्रित नहीं छोड़ा जा सकता। इसके लिए वहां पर कठोर पुलिस कार्यवाही आवश्यक है। देश की एकता और अखंडता के लिये इससे कम और कुछ नहीं चाहिये।

राष्ट्रपति शासन के बाद कई महीने तक सुरक्षा बल आतंकवादियों पर हावी हो रहे थे। हाल ही के कुछ सप्ताहों में आतंकवादियों को कुछ भयंकर सफलतायें प्राप्त हुई हैं। परन्तु यदि हम अपने संकल्प पर दृढ़ रहे तो अन्ततः हमारी विजय होगी।

एक सदस्य ने त्रिपुरा का उल्लेख किया था। त्रिपुरा को अशांत क्षेत्र घोषित करने के बारे में विरोधी दलों ने बहुत तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। महोदय, राज्य के लोगों ने इस बारे में अपना जनादेश दे दिया है कि त्रिपुरा एक अशांत क्षेत्र था अथवा नहीं · (व्यवधान)

महोदय, पिछली सरकार की अक्षमता और सरलता खतरनाक सम्मिश्रण से राज्य में विद्रोह की स्थिति व्याप्त हो गयी। यह विडम्बना ही है कि एक सदस्य ने हम पर विघटनकारी प्रवृत्तियों को बढ़ावा देने का आरोप लगाया है जबकि यह उनकी पार्टी की नम्रता और दुविधा ही थी जिसके कारण त्रिपुरा को इस संकट से गुजरना पड़ा।

श्री अमल दत्त : क्या आप जानते हैं कि वहां कोई हिंसा नहीं हुई ? टी०एन०वी० द्वारा की गयी हत्यायें केवल चुनावों से पहले ही हुई चुनावों के बाद नहीं एक भी नहीं···(व्यवधान)

श्री राजीव गांधी : अनजान निरीह व्यक्तियों के आम हत्यारों के लिए कोई प्रजातन्त्र नहीं हो सकता। हमारी शासन प्रणाली लोगों की इच्छा जाहिर करती है। यह प्रणाली निर्वाचित सरकार को अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने का प्राधिकार सौंपती है। विपक्ष के एक सदस्य द्वारा प्रस्तावित परिवर्तन हमारी स्थिरता को समाप्त कर देंगे और स्वयं प्रजातन्त्र को भी खतरे में डाल देंगे।

गत वर्ष अप्रैल-मई में मेरठ तथा कुछ अन्य स्थानों पर कुछ साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठे यह बड़े दुःख की बात थी। महोदय, वहां हिंसा को कुचल देने के लिए कारगर कार्यवाही की गई थी। परन्तु यह दुःख की बात है ऐसा बहुत सारे निर्दोष व्यक्तियों की हत्या से पूर्व नहीं हो सका। वहां अत्याचारों के आरोपों की जांच की गई है, जिला प्रशासन में परिवर्तन कर दिया गया है, पुनर्वास कार्य किया गया और धर्मान्ध लोगों का शमन कर दिया गया तथा कट्टरवाद को नियन्त्रित किया गया।

प्रो० मधु दंडवते (राजापुर) : हशीमपुर के बारे में क्या कार्यवाही की गई है ?

श्री राजीव गांधी : हमें इससे राहत अनुभव होती है कि इसके पश्चात् पुनः हिंसा नहीं भड़की और उसका आगे विस्तार भी नहीं हुआ। कुल मिलाकर देश में कोई बड़ी साम्प्रदायिक घटना नहीं हुई।

महोदय, साम्प्रदायिकता से लड़ने में हमारा सबसे बड़ा आधार यह है कि हमारे लोग अत्यधिक साम्प्रदायिक नहीं हैं। हमारी सहिष्णुता और भाईचारे की लम्बी परम्परा रही है। हमारी मिश्रित संस्कृति एक वास्तविकता है। हमें अनेकता में एकता का 5 हजार वर्षों का अनुभव है। साम्प्रदायिकता, कुछ उन गुमराह तत्वों का कार्य हैं जो कभी-कभी विशेष सामाजिक अव्यवस्था और तनावों का लाभ उठाकर लोगों की साम्प्रदायिक भावना में भड़काने में सफल हो जाते हैं। सम्प्रदायदारियों को रोकने के लिए हमें राजनैतिक स्तर पर कड़ी कार्यवाही करने की आवश्यकता हैं, साथ ही स्थानीय समुदायों और स्थानीय नेताओं को भी सतर्क रहना होगा। हमें ऐसे निष्पक्ष प्रशासन की

आवश्यकता है जो दृढ़तापूर्वक हिंसा से निपट सके। और सबसे बड़ी बात यह है कि हम अपने उन मूल्यों और मानदंडों का व्यापक बनाकर जो हमारी अपनी संस्कृति और परम्पराओं में निहित हैं साम्प्रदायिकता का मुकाबला कर सकते हैं।

हमारी सहिष्णुता और आत्मसात् करने की परम्पराओं को दो दिशाओं से खतरा है। पहला खतरा हमारे समाज के कुछ वर्गों पर वे हावी हो रहे भौतिकवाद से है। और दूसरा खतरा कट्टरपन्थी, साम्प्रदायिकता और क्षेत्रवाद आदि से है जो मुख्यत असहिष्णुता और हिंसा पर आधारित है जो इस बारे में गुमराह करते हैं कि यह जटिल समस्याओं का सरल समाधान है। आर्थिक अवसरों के कारण हमारी जनसंख्या में अभूतपूर्व गतिशीलता आई है। यह गतिशीलता लाखों व्यक्तियों को उनके परम्परागत बन्धनों से मुक्त कर रही है। लाखों व्यक्ति अपने व्यक्तिगत स्तर पर विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों और मतों के व्यक्तियों पर प्रभाव डाल रहे हैं। उन सभी के लिए हमें अपनी अनेकता को एक सजीव वास्तविकता बनाना है। उचित मूल्यों को अन्तर्निविष्ट करने के लिए हमारी शिक्षा प्रणाली में सुधार किया जा रहा है। हमारे 7 क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र अनेकता का सन्देश उन लोगों के द्वार तक पहुंचा रहे हैं जो दूर-दराज के क्षेत्रों में शहरी गन्दी बस्तियों में और देश के प्रत्येक भाग में प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं और देश के विभिन्न भागों की संस्कृति को एकजुट कर रहे हैं।

समाज के सभी वर्गों के प्रतिभावन लड़के-लड़कियों के लिए सर्वोत्तम शिक्षा प्रदान करने के लिए सभी राज्यों ने हमें अपना सहयोग दिया है। केवल एक राज्य ऐसा है जिसने हमें सहयोग नहीं दिया है। गरीबी को जारी रखने में और अपने इस विचित्र विश्वास में कि मूल पाठ्यक्रम विदेशी विचारधारों पर आधारित होना चाहिए, उनका स्वार्थ निहित है। उस राज्य में गरीबी के लिए प्रसन्तापूर्वक घटिया शिक्षा की व्यवस्था की गयी है जबकि देश के अन्य राज्य आगे बढ़ रहे है। आप्रेशन ब्लैकबोर्ड···(व्यवधान) यदि आप हमारी बात से सहमत हैं तो हम आपके राज्य में भी कुछ अच्छे स्कूलों की व्यवस्था करेंगे।

श्री सैफुद्दीन चौधरी : आप उनकी संख्या में वृद्धि क्यों नहीं कर देते···

श्री बसुदेव आचार्य : एक जिले में ही नवोदय विद्यालय क्यों हैं? सभी विद्यालयों को नवोदय विद्यालय क्यों नहीं बनाया जाता?

श्री राजीव गांधी : यदि आप सहमत है --

श्री सैफुद्दीन चौधरी : स्वतन्त्रता के 40 वर्षों के बाद भी एक जिले में केवल एक ही स्कूल है। इसका क्या अर्थ है? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइये। आप इस तरह नहीं कर सकते।

श्री राजीव गांधी : महोदय, स्वतन्त्रता के 40 वर्षों के बाद भी कुछ राज्य सरकारें गरीबों के लिए अच्छे स्कूलों की व्यवस्था करने के लिए प्रयत्नशील नहीं हैं और हमें गरीबों के लिए अच्छे स्कूलों की व्यवस्था करनी पड़ रही हैं और एक अथवा दो राज्यों में गरीबों के लिए अच्छे स्कूलों की व्यवस्था नहीं की जा रही हैं (व्यवधान)

अब प्राथमिक विद्यालयों में आवश्यक सामग्री की व्यवस्था करने के लिए राज्य सरकारों की मदद से आप्रेशन ब्लाजबोर्ड योजना आरम्भ की गई है। यह राज्य सूची का विषय है। क्या आगे आकर हमें यह काम करना चाहिए? परन्तु हम ऐसा कर रहे हैं क्योंकि हम गरीब लोगों के बारे में चिन्तित है।

[हिंदी]

क्योंकि हमारे दिल में दर्द है।

[अनुवाद]

श्री वसुदेव आचार्य : शिक्षा समवर्ती सूची का विषय है।

श्री राजीव गांधी : यही कारण है कि हम इसे आपको दे रहे हैं। केन्द्र केवल अनुपूरक उत्तरदायित्व राज्य सरकारों का होना चाहिए। राज्य इस उत्तरदायित्व को गम्भीरतापूर्वक निभायेंगे।

श्री रघुनन्दन लाल भाटिया (अमृतसर) : महोदय, उनकी शिक्षा के लिए भी एक स्कूल खोल दीजिए।

श्री राजीव गांधी : अब 200 से भी अधिक नवोदय विद्यालय खोले जा चुके हैं। और अधिक विद्यालय निकट भविष्य में खोल दिए जायेंगे। इन नवोदय विद्यालयों में पढ़ने वाले अधिकांश लड़के लड़कियां समाज के गरीब वर्गों से आते हैं।

श्री वसुदेव आचार्य : उनके कितने विद्यार्थी हैं।

श्री राजीव गांधी : नवोदय विद्यालयों की ऐसी पृष्ठ भूमि तैयार की गई है कि उनमें पढ़ने वाले अधिकांश विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्रों से है। इन ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों में प्रचुर मात्रा में प्रतिभा है जो व्यर्थ जा रही थी क्योंकि इन गरीब विद्यार्थियों के लिए अच्छे स्कूल उपलब्ध नहीं थे। दूसरी बात यह है कि इस प्रतिभा के व्यर्थ जाने से राष्ट्र को हानि हो रही थी। इससे प्रतिभा का सम्पूर्ण भण्डार व्यर्थ जा रहा था और नवोदय विद्यालयों ने उस भण्डार को बाहर निकाला है। देश में पहली बार गरीब लोगों के बच्चों के लिए सर्वोत्तम शिक्षा उपलब्ध है। इस उत्तमता के भण्डार का लाभ उठा कर ही हमारा देश अधिक तेजी से प्रगति करेगा और हम उन निहित स्वार्थों के विरुद्ध लड़ेंगे जो गरीबों को अच्छी शिक्षा से वंचित करने पर आमादा हैं। हम गरीबों को अच्छी शिक्षा देंगे।

महोदय, महिलाओं को उनके पूर्ण अधिकार दिलाना और उनका उत्थान भी हमारी मुख्य प्राथमिकता रही है। इन वर्षों में हमने महिलाओं को संरक्षण प्रदान करने की दिशा में कई कानून बनाए हैं। महिलाओं को उनके अधिकार दिलाने के लिए कुछ कानून अत्यधिक कठोर बनाये गए हैं इस प्रकार के कानून बनाये गये है जैसे कि इस सभा में पहले कभी नहीं बनाये गए थे। हमने सभी राज्यों की लड़कियों को मुफ्त शिक्षा प्रदान करने का प्रावधान किया है। हमने महिलाओं की एक राष्ट्रीय समिति बनाई है जो विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञता प्राप्त महिलाओं को एक मंच पर लाती है और महिलाओं के लिए कार्यक्रम बनाने तथा उनका क्रियान्वयन करने के विषय में सलाह देती है।

हमारा देश अधिक युवा होता जा रहा है।

श्री वसुदेव आचार्य (बांकुरा) : युवा होता जा रहा है! [व्यवधान]

श्री राजीव गांधी : यह सच है। हमारे देश की औसत आयु जबकि हममें से कुछ अधिक आयु के बूढ़े और जराग्रस्त हो गए हैं, हमारा देश युवा होता जा रहा है। आज हमारे देश की लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या 40 से कम आयु-वर्ग में आती है और हमारे युवाओं की समस्याओं को बहुत अधिक

राष्ट्रीय प्राथमिकता देने की आवश्यकता है। सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी की है। रोजगार देने के लिए, सबसे पहले शिक्षा व्यवस्था के ढांचे में परिवर्तन करना आवश्यक था। हम पहले ही यह प्रक्रिया शुरू कर चुके हैं। हमें युवाओं में उद्यम और पहल की भावना पैदा करने की आवश्यकता है। हमें रवैये में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। हमें उनको इस योग्य बनाना है कि वे भारत और उसकी विरासत पर गर्व सहमूस करें। हमने युवा कार्यक्रमों और खेल-कूद की गतिविधियों में होने वाले खर्च में बहुत अधिक वृद्धि की है और इससे युवा-गतिविधियों का स्तर सुधरेगा।

महोदय, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति सामाजिक और आर्थिक दबावों के अधीन अभी भी दुःख भोग रही हैं। उनकी असमर्थताओं को समाप्त करने और उनके लिए न्याय को सुनिश्चित करने के लिए हम अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए कल्याण कार्यक्रमों, विकास कार्यक्रमों को पहले से कहीं अधिक उच्च स्तर पर बढ़ावा दे रहे हैं, हमने अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति आयोग के नवीकरण और आयुक्त के हाथ मजबूत करने के लिए ढांचे में बड़े सुधार किए हैं। अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए निर्धारित राशि में से लिए जाने वाले खर्च पर मैं स्वयं निगरानी रख रहा हूं।

अल्पसंख्यक समुदाय हमारी मिली-जुली विरासत और मूल्यवान परम्पराओं की बहुमुख विविधता के अभिन्न अंग हैं। यदि हम अपनी संस्कृति की संपूर्णता के किसी अंग से वंचित हो जाते हैं तब भारती भारत नहीं रह सकता कुछ अल्पसंख्यक समुदायों का औसतन असाधारण उत्थान हुआ है। अन्य समुदाय, विभिन्न कारणों से विशेष कठिनाइयां उठा रहे हैं और उन पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। अल्पसंख्यक समुदायों की समस्याओं के समाधान की कुंजी इन्दिरा जी के 15 सूत्रीय कार्यक्रम के ईमानदारी से कार्यान्वयन में निहित है। हमने इस कार्यक्रम की निगरानी व्यवस्था को सुदृढ़ किया है, इसको सुनिश्चित करने के लिए कि अल्पसंख्यक राष्ट्रीय जीवन में भूमिका निबाहते हैं, उन्होंने योगदान दिया है और जो योगदान वे दे सकते है, हम जो कुछ कर सकते हैं वह सब करेंगे। महोदय, अफगानिस्तान से सोवियत सेना को वापस बुलाने के लिए जनरल सेक्रेटरी गोर्बाचेव की पहल के बारे में माननीय सदस्य जानते हैं। हम उनकी पहल का स्वागत करते हैं। जो शांतिपूर्ण समझौता चाहते हैं वे भी इसका स्वागत करते हैं। हम आशा करते हैं कि जनेवा वार्ता सफल होगी हम आशा करते हैं कि जनेवा समझौते पर 15 मार्च से पहले हस्ताक्षर हो जायेंगे ताकि 15 मई से सोवियत सेना की प्रक्रिया आरम्भ हो सके। इस समस्या के समाधान में सहायता देने के लिए हम 1980 से कार्य कर रहे हैं। इन्दिरा जी ने अफगानिस्तान के प्रधान मन्त्री से बातचीत की थी। विदेश मंत्रियों के स्तर पर हमने अनेक बार बातचीत की थी। आज हो रही बातचीत के महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक हस्तक्षेप और दखल अंदाजी को रोकने के लिए निर्गुट राष्ट्र सम्मेलन द्वारा बनाए गए नियमों में हमने महत्वपूर्ण भूमिका निबाही है। मई-जून से मैंने जनरल सेक्रेटरी गोर्बाचेव और प्रेसीडेन्ट रीगन के साथ अनेक बार चर्चा और बातचीत की थीं। गतवर्ष के अन्त में जब प्रेसीडेंट नजीब हमारी रचनात्मक भूमिका को मान्यता देने भारत आए थे तब मैंने उनके साथ लम्बी बातचीत की थी। संयुक्त राज्य अमरीका और सोवियत संघ ने इस समस्या के समाधान में हमें विश्वास में लिया है। अफगानिस्तान की प्रमुख हस्तियों ने हमारी भूमिका को सराहा है। कुछ ने अफगानिस्तान की समस्या के समाधान में भारत के शामिल होने की आवश्यकता पर एतराज किया है। हम चुपचाप नहीं रह सकते हैं। अफगानिस्तान में जो हो रहा है वह हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अफगानिस्तान हमारा पड़ोसी है। अफगानिस्तान हमारे क्षेत्र का एक अंमिन्न अंग है। अफगानिस्तान में हुई

घटनाओं से हमारे क्षेत्र में बड़ी शक्तियों का संघर्ष हमारे बहुत निकट आ गया है। अब अवसर है कि हम निर्गुट शक्तियों को मजबूत करें। इसी कारण से मैंने पाकिस्तान के प्रेसीडेंट को इस कार्य के लिए दिल्ली आने का निमन्त्रण दिया। प्रेसीडेंट जिया आने में असमर्थ रहे, उन्होंने कहा कि देश की राजनीतिक गतिविधियों में पूर्व-निर्धारित कार्यक्रमों मे व्यस्त होने के कारण वे आने में असमर्थ है। उनके सुझाव पर मैंने अपने विदेश सचिव को अपना विशेष दूत नियुक्त किया। इस क्षेत्र में स्थिरता के लिए, भारत और पाकिस्तान को इस समस्या का समाधान ढूंढने के लिए मिलकर काम करने की आवश्यकता है। इस सम्बन्ध में, मैं प्रेसीडेंट जिया से बात करना चाहता हूं। सब की भलाई और हर एक हित के लिए हम मिलकर इस समस्या का समाधान ढूंढ सकते हैं। मैं आशा करता हूं कि इस बारे में व्यापक विचार विमर्श के अवसर शीघ्र ही उपलब्ध होंगे श्रीलंका में, भारत-श्रीलंका समझौते के कार्यान्वयन में हाल ही के दिनों में काफी प्रगति हुई है। इस समझौते का उद्देश्य तमिलों को न्याय दिलाना और श्रीलंका की एकता और अखण्डता को बनाए रखना है। इस समझौते का उद्देश्य हमारे सुरक्षा हितों को बनाए रखना तथा इस क्षेत्र में निर्गुट शक्तियों को बनाए रखना है। राष्ट्रीपति जयवर्धने ने इस बात को दोहराया है कि जो लोग हथियार डाल देंगे उन्हें आम्माफी देनी जाएगी। प्रान्तीय परिषदों को अधिकार देने की दिशा में निश्चित प्रगति हुई है। राष्ट्रपति जयवर्धने इस वर्ष के मध्य तक चुनाव कराने का वचन दिया है। विलय को वास्तविक रूप प्रदान करने के लिए उत्तर और पूर्व में एकता प्रांतीय परिषद के चुनाव होंगे।

इस प्रकार श्रीलंका के तमिलों को अपना प्रशासन चलाने के लिए अपने मन चाहे प्रतिनिधि लोकतांत्रिक रूप से चुनने का अवसर मिलेगा। श्रीलंका के तमिलों को, विभिन्न तमिल गुटों द्वारा तमिलों का प्रतिनिधित्व करने के दावों को परखने का अवसर भी मिलेगा। इसका निर्धारण मतपत्र पेटी द्वारा होना चाहिए।

(व्यवधान)

श्री एन० वी० एन० सोमू (मद्रास उत्तर) : वहां निर्दोष तमिल मारे जा रहे हैं।...

(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए, कृपया कोई व्यवधान मत डालिए माननीय सदस्य को अनुमति नहीं है।

श्री राजीव गांधी : मैं माननीय सदस्य से पूर्णतः सहमत हूं। हम निर्दोष तमिलों की हत्या नहीं चाहते। निर्दोष तमिलों की रक्षा के लिए हम सब कुछ करेंगे और हमने ऐसा किया भी है। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : अनुमति नहीं है।

श्री राजीव गांधी : वास्तव में, भारतीय शांति सेना का कार्य निर्दोष तमिलों की रक्षा करना ही है। (व्यवधान)

इससे श्रीलंका के तमिलों को यह जानने का अवसर मिलेगा कि तमिलों का प्रतिनिधित्व वास्तव में कौन करता है और उनका प्रतिनिधित्व बदूंक की नली द्वारा नहीं, मतपत्र-पेटी द्वारा कौन करता है।

**कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

सामान्य स्थिति वापस आ जाने का उत्साहदायक संकेत शरणार्थियों की वापसी है। लगातार भारी संख्या में शरणार्थी स्वदेश लौट रहे हैं।

इस अवसर पर मैं भारतीय शांति सेना के सैनिकों की उनके उस शौर्य, अनुशासनबद्धता और साहस के लिए अत्यधिक प्रशंसा करता हूं जो उन्होंने इस नाजुक कार्य को करने में दिखाया है और यह शोचनीय बात है कि भारतीय शांति सेना के कार्य के बारे में दुर्भावनाशील मनगढ़न्त बातों पर सभा में से क्या किसी को भी विश्वास करना चाहिए

(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : कृपया कोई व्यवधान मत डालिए कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया जाए।

राजीव गांधी : हमें हमेशा घटनाओं की छोटी-छोटी बातो में फंसने की आशंका बनी रहती है। यह सही है कि आंकड़े महत्वपूर्ण हैं किन्तु हमें भारत के व्यापक परिप्रेक्ष्य में घटनाओं को देखना चाहिए। विश्व में भारत का महत्व है। विचारों की दुनिया में भारत अग्रणी है। हमारा महत योगदान मानवजाति की भावना और आत्मा के लिए मूल्यों और आदर्शों को बनाए रखना रहा है। हमारा राष्ट्रीय कार्य मानवीय सभ्यता की प्रथम पंक्ति में भारत को उसके सही स्थान पर वापस लाना है। इस कार्य में विकास एक अनिवार्य घटक है किन्तु वास्तविक चुनौती केवल् विकास और वृद्धि के पीछे की बातों का जवाब देना है। हमारी स्वतंत्रता के 40 वें वर्ष में इस महान कार्य के लिए राष्ट्र का आह्वान है।

अध्यक्ष महोदय, मैं राष्ट्रपति के प्रेरणादायक अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव का समर्थन करता हूं और सभा से वैसा ही करने का आग्रह करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्तात पर सदस्यों द्वारा बहुत से संशोधन प्रस्तुत किए गए हैं। क्या मैं सभी संशोधनों को एक साथ सभा के मतदान के लिए रखूं।

अनेक माननीय सदस्य : जी हां, जी हां,

अध्यक्ष महोदय : ठीक है।

प्रो० मधु दंडवते : अध्यक्ष महोदय, आप से एक निवेदन है। नियम 184 के अधीन में आपको एक प्रस्ताव की सूचना दे चुकी हूं जो आपको भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति द्वारा कुछ मंत्रियों और विपक्ष के प्रति लगाए गए आरोपों की जांच करने के लिए सभा-समिति स्थापित करने का अधिकार देता है। कृपया उस पर विचार कीजिए।

अध्यक्ष महोदय : मैं अब धन्यवाद प्रस्ताव के लिए प्रस्तुत किए गए सभी संशोधनों को सभा के मतदान के लिए एक साथ रखूंगा।

सभी संशोधन मतदान के लिए रखे गए तथा अस्वीकृत हुए।

अध्यक्ष महोदय : प्रश्न यह है :

"कि राष्ट्रपति की सेवा में निम्नलिखित शब्दों में एक समावेदन प्रस्तुत किया जाए :—

**कार्यवाही-वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।